श्रीभट्ट

(खण्ड काव्य)

शारदा पुस्तकालय
(संभावना शो. द. केन्द्र)
क्रमांक 683

पृथ्वीनाथ मधुप

श्रीभट्ट

(खण्ड काव्य)

शारदा पुस्तकालय
(संजीवनी शा. द. केन्द्र)
क्रमांक 683

पृथ्वीनाथ मधुप

पुस्तकालय
(संजीवनी शारदा केन्द्र)
के लिए सप्रेम!
13/11/07

श्रीभट्ट

(खण्ड काव्य)

पृथ्वीनाथ मधुप

निर्वासन साहित्य प्रकाशन
नई दिल्ली / जम्मू।

© कवि

प्रथम संस्करण : 2007

शब्द संयोजन : जनरेशन क़ेयर कम्पयूटर्स
सूर्यविहार, पाटा बोड़ी,
जम्मू तव्वी - 180002

मुद्रक :

प्रकाशक :-

निर्वासन साहित्य प्रकाशन

1. विस्थापित नगरोटा कैंप
284, नगरोटा, जम्मू ।

2. मासमीडिया एन्टरटेन्मेंट , प्रा० लि०,
902, नई दिल्ली हाउस,
बाराखंबा रोड; कनॉटप्लेस, नई दिल्ली ।

मूल्य : 80 रुपये

Shribhatta

By : Prithvi Nath Madhup

आवरण चित्र : संजीवनी शारदा केन्द्र, आनन्द नगर, बोड़ी, के सौजन्य से।

प्राणप्रिय

आयुष्यमान

तथा

अपूर्वा

के लिए

क्रम

		पृष्ठ संख्या
पूर्ववचन	:	1
युगपुरुष पण्डित श्रीभट्ट	:	8
प्रकरण - एक	:	21
प्रकरण - दो	:	25
प्रकरण - तीन	:	29
प्रकरण - चार	:	37
प्रकरण - पाँच	:	42
प्रकरण - छः	:	47
प्रकरण - सात	:	52
प्रकरण - आठ	:	60
उपसंहार	:	62

पूर्ववचन

कब से ललक थी लिखने की वैद्य शिरोमणि पण्डित श्रीभट्ट के विषय में। युवावस्था से ही श्रीभट्ट के बारे में अधिक जानने की मेरी उत्कट इच्छा थी। तभी तो एक जिज्ञासु बनकर मैंने कश्मीर सम्बंधी इतिहास से कई पन्ने पलटने तथा विशेषज्ञों से जानकारी एकत्र करने का प्रयास किया। कश्मीर से जब मेरा स्थानांतरण हुआ तो कई विवशताओं के कारण यह सिलसिला थम सा गया। कालांतर में उत्तरकाशी से जब मैं जम्मू आया तो यह जिज्ञासा फिर जागृत हुई।

रणवीर पुस्ताकलय में कई कश्मीर संबन्धी पुस्तकें मिली, पढ़ीं। यहीं पर प्रोफोसर श्यामलाल साधु (जो मेरे अंग्रेज़ी के शिक्षक रहे हैं)

द्वारा लिखित अंग्रेज़ी पुस्तक 'टेल्ज़ फ्रॉम राजतरंगिणी' भी मिली। इस में एक कथा संगृहीत हैं– 'ज़ैन –उल–आबिदीन और श्रीभट्ट'। इस कथा से श्रीभट्ट के बारे में कई सूत्र मिल गये। एक बात बहुत अखरती है कि प्रत्येक लेखक ने श्रीभट्ट को कोई महत्व न देकर सारा ध्यान ज़ैन–उल–आबिदीन पर ही केन्द्रित किया है! उस युग के सर्वोच्च वैद्य, आध्यात्मिक पुरुष, गरुड़ शास्त्र के विशेषज्ञ, कश्मीर में पंथनिरपेक्षता के प्रवर्त्तक तथा कश्मीरियत के वास्तविक जन्मदाता को नज़र अंदाज़ किया गया है। क्या इतिहास के पन्ने राजाओं, महाराजाओं और सुल्तानों के लिए ही सुरक्षित हैं? अगर कहूँ कि वास्तविक इतिहास अभी तक लिखा ही नहीं गया तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी!

पण्डित कल्हण के बाद पण्डित श्रीवर तथा पण्डित जोनराज ने भी राजतरंगिणी लिखने की परम्परा को आगे बढ़ाया। सुनने में आया है कि पण्डित जोनराज पण्डित श्रीभट्ट के शिष्य थे।

दोनों पण्डितों के सुल्तानों द्वारा कश्मीरी पण्डितों पण्डित संस्कृति, साहित्य तथा संगीत आदि के विनष्ट होने का उल्लेख किया है।

दो उदाहरण प्रस्तुत हैं, देखिये:-

1. सेकन्धरधरानाथो यवनैः प्रेरिता पुरा।
पुस्तकान सकलान सर्वस्तृणान्यग्निरिवादहत्।

अर्थात्-मुस्लिम सुल्तान सिकन्दर ने सैयदों के कहने पर समस्त संस्कृत साहित्य को ऐसे आग के हवाले किया जैसे घास के तिनकों को जलायाे जाता है। (पं॰श्रीवर)

2. मरुभ्दिरिववृक्षाणांशालीनां शलभैरिव।
कश्मीरदेशाचाराणांध्वंसोऽथ यवनैः कृता।

अर्थात् - मुस्लिम आक्रमाकारियों द्वारा कश्मीर को हथियाने पर, उन्होनें कश्मीर के साहित्य, संस्कृति, कला एवं सर्वस्व को ऐसे नष्टप्राय किया जैसे वर्षा एवं तूफान बड़े-बड़े वृक्षों को जड़ सहित उखाड़ता है और जैसे समूचे धान के खेत टिड्डी दल द्वारा बर्बाद किये जाते हैं। (पं॰ जोनराज)

कहते हैं कि संस्कृत में निष्णात सोम पण्डित ने ज़ैन–उल–आबिदीन का वृत्त 'जैन चरित' नाम से लिखा है। वह जैनुल के दरबार में अनुवाद विभाग में उच्च पद पर कार्यरत थे। प्रयास करने पर भी मैं इस पुस्तक को प्राप्त न कर सका। क्या पता पुस्तक में कहीं श्रीभट्ट के संबन्ध में कुछ लिखा हो। इस पुस्तक के बारे में सुनने के बाद मास्तिष्क में एक प्रश्न रह–रह के उठता गया कि क्या पँ० जोनराज ने अपने गुरु पँ० श्रीभट्ट पर कोई पुस्तक नहीं लिखी होगी? हो सकता है कि लिखी भी हो पर वह पुस्तक हम तक इसलिए नहीं पहुंच पाई है क्योंकि वह भी सुल्तानों एवं पठानों ने अन्य सैकडों पाण्डुलिपियों की तरह किसी सेतु–निर्माण में लगाई होगी या फिर आग की लपटों के हवाले की होगी ।

मेरे मित्र पण्डित दयाकृष्ण बाबू ने एक अंग्रेज़ी आलेख 'युग पुरुष श्रीयुत श्रीभट्ट' 'ओरेकल कश्मीरी पंडितस' के मार्च – अप्रैल 2008 के

अकं में प्रकाशित कराया है। श्रीभट्ट के संबन्ध में कई संकेत तथा श्लोक मैंने इसी अनियतकालीन पत्रिका से लिए हैं। इसके लिए मैं श्री बाबू का आभार व्यक्त करता हूँ।

श्रीभट्ट के बारे में निम्न दो श्लोक भी मुझे उक्त आलेख से ही मिले हैं, देखिये:-

यज्वा गरुडशास्त्रज्ञा: शिर्यभट्टो नृपानुगै:।
अन्नान्विषभिदराप्रोऽथ कूपोऽध्वन्यैर्मराविव।।

अर्थात्-अच्छी तरह से ढूंढने के पश्चात् गुप्तचरों ने वैद्य श्रीभट्ट को, जो हवन करने वाला तथा गरुडशास्त्र (फोडों का विज्ञान) का विशेषज्ञ था, को ऐसे पाया जैसे कोई प्यासा मरूस्थल में जल प्राप्त करता है।

तुष्टेन भुभुजा दत्ता यथेष्टमपि संपदाम्।
नैक्षिष्ट शिर्यभट्ट: सयतात्मेव वराङ्गनाम।।

अर्थात् सुल्तान की असह्य बीमारी का सफल उपचार करने पर सुल्तान बहुत प्रसन्न

हुआ और वैद्य श्रीभट्ट को ज़मीन तथा दूसरी अमूल्य वस्तुएं भेंट में देने की इच्छा प्रकट की, पर वैद्यराज इस सब से किसी प्रकार भी लोभ के वशीभूत नहीं हुए और पुरस्कार लेने में तनिक भी रुचि नहीं दिखाई।

सुने–पढ़े संकेतो तथा अपने जीवनानुभव को आधार बनाकर मैंने श्रीभट्ट (खंडकाव्य) पर लिखने का प्रयास किया। कहीं–कहीं पर संवाद को गढ़ने में प्रसंगानुकल लेशमात्र कल्पना का भी सहारा लिया गया है। खण्डकाव्य विलम्ब से लिखने का महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि मैं अस्वस्थ हो गया। डॉक्टरों एवं एम.आई.आर. रिपोर्ट के अनुसार, मेरे सिर कि किसी नस में खून का थक्का जम़ गया है। उठने, बैठने, चलने, फिरने, यहाँ तक कि बात करने तथा लिखने में भी बहुत तकलीफ होती है यह काव्य लिखले का साहस इसलिए किया क्योंकि मुझे भय था कि मेरा जीवन कभी किसी भी समय समाप्त हो सकता है। इससे पहले ही मैं अपनी

जाति के त्राता के अपूर्णीय ऋण से तनिक उऋण होना चाहता था।

अस्वस्थ शरीर और उपचाराधीन अवस्था के बीच जो कुछ मैंने लिखा उस पर मुझे पूरा भरोसा न था इसीलिए मैंने अपने दो हितैषी मित्रों – प्रो० चमन लाल सपरू तथा डॉक्टर महाराजकृष्ण भरत को श्रीभट्ट की पाण्डुलिपि से गुज़रने की विनती की। प्रो० सपरू ने श्रीभट्ट को मासिक कॉशुर समाचार में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया। डॉ. भरत ने कृपा कर काव्य में यत्र–तत्र थोड़ा बहुत जोड़ भी दिया। मैं इन दोनों महानुभावों का हृदय से आभार मानता हूँ।

जय वीणापाणि !

व्यथ्यु–त्रुवाह 2007

– पृथ्वीनाथ मधुप

58, शान्ता सदन, सरस्वतीविहार, तालाब तिल्लो, जम्मू।

युगपुरुष पण्डित श्रीभट्ट

मध्यकालीन कश्मीर में आयुर्वेद के प्रवर्त्तक वैद्यक परम्परा के अग्रदूत, सनातन हिन्दू संस्कृति के ध्वजावाहक शल्यचिकित्सक वैद्य शिरोमणि पण्डित श्रीभट्ट घाटी के ऐसे देदीप्यमान नक्षत्र के रूप में उभरे, जिन्होंने अपनी असाधारण प्रतिभा के बल पर न केवल तत्कालीन शासक ज़ैन-उल-आबिदीन (1420-1470) को जीवन दान ही नहीं दिया वरन् अपने ज्ञान की अजस्रधारा से उसका हृदय परिवर्तन भी किया तथा उसे हिन्दू संस्कृति के निकट लाकर भारतीय दर्शन, कला, संस्कृति एवं साहित्य का उपासक बनाया। सम्भवतया कश्मीर क़ी अंतिम हिन्दू साम्राज्ञी कूटरानी के बाद घाटी के रक्तरंजित इतिहास में

यह एक ऐसी विरली घटना थी, जब किसी आततायी आक्रान्ता के अत्याचारों से त्रस्त होकर पैतृक घरों से पलायन कर गए विस्थापित हिन्दुओं को किसी मुस्लिम शासक ने अपने काल खण्ड में पहली बार वापस बुलाया था। यह सब कुछ अकस्मात् नहीं हुआ था, इसके पीछे वैद्य श्रीयुत् श्रीभट्ट की तपस्‌चर्या, त्याग, समर्पण तथा समाज और राष्ट्र के लिए कुछ कर गुज़रने की भावना निहित थी।

यद्यपि इतिहास पुरुष पण्डित श्रीभट्ट के उल्लेखनीय योगदान का चित्रण उनके समकालीन इतिहासकारों– पं श्रीवर और पं जोनराज ने अपनी राजतरंगिणियों में किया है, वहीं कुछ मुस्लिम इतिहासकारों ने भी उनकी चारित्रिक विशेषताओं को सामने लाया है। बीसवीं शताब्दी में प्रो० त्रिलोकीनाथ गंजू ने अपनी पुस्तक 'महाश्री शिर्यभट्ट' में श्रीभट्ट के ऐतिहासिक और क्रांतिकारी योगदान का वर्णन किया है, वही

सांस्कृतिक भावबोध की भूमि पर रचनाशील लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यकार पृथ्वीनाथ मधुप ने आतंकवाद और विस्थापन के इस दौर में कश्मीरी पण्डितों के त्राता, हितैषी एवं समाजसुधारक युगपुरूष श्रीभट्ट का चरित्र देशकाल और वातावरण को देख नए संदर्भ में प्रस्तुत किया है। कवि पंद्रहवीं शताब्दी के ऐतिहासिक पात्र श्रीभट्ट के मिथक के द्वारा वर्तमान की घटनाओं से अतीत का सुमेल कराते हैं। इससे पूर्व कवि ने 'रुकी नदी' नामक खण्ड काव्य में नौवी शताब्दी के अभियंता सुय्य की भूमिका को चरितार्थ करते हुए उसे भी समसामयिक पदिदृश्य से जोड़ा था।

लगभग सत्राह पुस्तकों, जिनमें श्रीभट्ट समेत सात काव्य एवं कश्मीर की संस्कृति और लोककथाओं पर आधारित दो पुस्तकें शामिल हैं, के रचियता मधुप वर्तमान की ज्वलंत परिस्थितियों का समाधान अपने इतिहास पुरुषों में खोजते हैं। अलगाववाद मुंह बाएँ खड़ा है इस्लामिक कट्टरवाद

के विषैले वातावरण में बंदूक की नोंक पर साढ़े तीन लाख से अधिक कश्मीरी हिन्दुओं को अपने घरों से निकाल दिया गयां है, उनकी वापसी के मार्ग पर सरकारी एवं गैर–सरकारी स्तर पर रोड़े अटकाए जा रहे हैं तो ऐसे में एक बार फिर कवि मधुप इतिहास के उन पन्नों को पलटते हुए दिखाई दे रहे हैं, जहां श्रीभट्ट ने अपने निर्वासित समुदाय की वापसी का मार्ग प्रशस्त किया था। उन्हें आशा है कि वर्तमान में जिस रक्तरंजित इतिहास की पुनरावृत्ति हुई है, उस महाविपदा से बचाने के लिए एक दिन अवश्य ही विस्थापितों के भीतर से श्रीभट्ट प्रकट हो जाएंगे और समुदाय को एक बार फिर कश्मीर की जडों के साथ जोड़ देंगे।

'श्रीभट्ट' शीर्षक से रचियत यह खण्ड काव्य आठ सर्गों में संगृहीत है। इस में इतिहास के क्रूर अध्याय से 'अस्वीकृति' के स्वर में ही घेरे में लाया इस्लाम की घटना से ले कर 'जैनुल के फरमान पर लौट आये थे/ अधिकांश

कश्मीरी पण्डित अपनी मातृभूमि में' तक का इतिहास दर्ज है। यहां धर्मांतरित कश्मीर की अंतिम हिन्दू साम्राज्ञी का अदम्य साहस और वीरांगनापन झलकता है, साथ ही डुलचू, सिकन्दर और औरंगजेब के अत्याचारों से निस्सहाय नारियों की चीखें, बलात् मतांतरित प्रजाजनों की आहें और बर्बर हत्याकाण्डों का आर्तनाद भी गूंजती है। यहां खंडित मूर्तियों, टूटे हुए कलशों, गूंगे हो चुके घड़ियालों में बुतशिकन की कट्टरपंथी मानसिकता प्रदर्शित होती है।

कवि ने अतीत की कथा को काव्य भाषा के माधुर्य में पिरोते हुए इसे नाटकीय अंदाज़ में रूपायित किया है और श्रीभट्ट व ज़ैनुल के संवादों में यथार्थ के साथ-साथ प्रसंगानुकूल कल्पना का भी साहरा लिया है। चौथे प्रकरण के माध्यम से कवि उसी घटना का उल्लेख करते हैं जब शरीर पर निकल आए विषैले फोड़े के कारण तत्कालीन शासक ज़ैन-उल-आबिदीन मरणासन्न पर होते हैं। कश्मीर से लेकर काबुल

और यूनान तक के नामी हकीमों / सैय्यदों को उपचार के लिए बुलाया जाता है, लेकिन कोई भी चिकित्सा फलीभूत दिखाई नहीं देती। पं ज़ोनीराज अपनी 'राजतरंगिणी' में उसी आशा की किरण का उल्लेख करते हुए लिखते हैं जिसने शासक को जीवन दान दिया, "अन्ततः राजकर्मचारियों ने विषों को प्रभाव दूर करने वाले श्रीभट्ट नामक व्यक्ति को ढूंढ निकाला, वह घाव भरने का उपचार भी भलीभांति जानते थे। 'गरुड़शास्त्र' के विशेषज्ञ श्रीभट्ट ने राजा के विषैले फोड़े को पूर्णतया ठीक कर उसे जीवनदान दिया।'

कवि मधुप इस घटना को यूं चित्रित करते हैं :

छान मारे कई जंगल
गुप्तचर कला के विशेषज्ञ थे
अतः पाया पंडित को

+ + +

संजीवनी तैयार हुई
ब्रह्ममुहूर्त में अपने हाथों
फोड़े पर जब लेप लगाया
स्पर्षमात्रा से ही
औषधि के रोगी राहत
अत्यधिक पाया

श्रीभट्ट का शब्दचित्र खींचते हुए छठे प्रकरण में काव्य की एक बानगी प्रस्तुत है,
'कहा सुल्तान।/वापस बुलवालो ।
मुल्क बदर जो किये हैं पंडित।
जज़िया मालेगनीमत शवदाह कर
गरज़ कि कर सारे
पंडितों पर लगाये हैं जो माफ कर दो
अपना धर्म पालन करने की/
हो छूट अब से पंडितों को ....
खुलवा दो ताले। संस्कृत शालाओं के/
संस्कृत संस्कृति की भाषा है,
अध्ययन अध्यापन से रोक हटा दो।

शासक के लाख अनुनय – विनय करने पर श्रीभट्ट ने उसे अपने व्यक्तिगत सुख एवं ऐश्वर्य के लिए कुछ नहीं मांगा, धन, वैभव या जागीर नहीं मांगी, केवल निर्वासन में जी रहे हजारों हिन्दुओं की कश्मीर वापसी की मांग को उनके समक्ष रखा:

लंबा चोगा/ हिम जैसी श्वेत/पगडी/
पैरों में 'पुलहोर' कन्धों से झूलती कपर चादर
ललाट पर कुंमकुंम तिलक बडी हुई दाढ़ी/
तेजस्वी चेहरा/ बादाम – सी आयत आँखें
आध्यात्मिक पराकाष्ठा पर /
पहुँचे हुए वन्दनीय संत अनोखे
आकर्षण से भरपूर ।

ऐसे जाति उद्धारक, समाज सुधारक, महान देशभक्त थे– युगपुरुष श्रीभट्ट, जिनकी चारित्रिक विशेषताओं को उजागर करते हुए कवि आशांवित है कि आतंक एवं अलगाववाद के इस दौर में नए मूल्यों की प्रस्थापना होगी, नैराश्य और अवसाद के क्षणों में जी रही उपेक्षित, अवहेलित,

हाशिए पर धकेल दिए गए कश्मीरी विस्थापितों का भविष्य सुनहरा होगा। इसलिए कवि 'उपसंहार' में कश्मीरी विस्थापितों के सम्मुख समय की चुनौतियों को लाकर खड़ा कर देता है। उनमें कश्मीर की सांस्कृतिक विरासत को पूर्णतया आत्मसात् करने के लिए चेताता है और अपने भीतर झांक कर यह देखने के लिए कहता है कि

क्या तुम/तुम रह गए हो/या फिर /

कोई और हो गए हो ?

प्रस्तुत काव्य पुस्तक में कवि की केंद्रीय संवेदना भी यही है कि विकट परिस्थितियों में जब विस्थापित का घर छिन चुका है, वहां के मंदिर-देवालयों के आशीर्वाद उससे दूर हैं, वह अपनी जन्मभूमि का स्पर्श पाने को वंचित हैं, तो ऐसे में हाथ पर हाथ धरे बैठकर रहने से क्या उन्हें यह भान है कि आज के युग में श्रीभट्ट स्वयं आकर उनके घावों पर मरहम

लगाएंगे या फिर इस आत्मचिंतन और आत्ममंथन की घड़ी में उन्हें अपनी चेतना और संघर्ष द्वारा श्रीभट्ट को जन्म देना होगा।

"कहा श्रीभट्ट ने मैं आऊंगा
पाओगे तुम मुझे अवश्य ही/एक दिन
अपने भीतर/जब साकार हो उठेगा
तुम्हारा दबा पड़ा उत्साह
विरासत के अनमोल क्षण संस्कृति
तुम्हारे आकाश पर टिमटिमाने लगेगा
जब मेरा ज्ञान तुम्हारे आचरण से फूट
पड़ेगा संकटाच्छन्न्न ये मेघ छंट जाएंगे/और
सरस होगी तुम्हारी आशाओं की धरती।

कवि को यह विश्वास हो गया है कि अब कश्मीरी विस्थापित अपनी संघर्षमयी यात्रा पर अग्रसर हुए बिना नहीं रह सकते इसलिए तो विस्थापित अब सुप्तावस्था से जागृतावस्था में आया है

उस रोज़ जागा/अब तक/नहीं सो सका पण्डित

वह अब जीवन में विश्रांति नहीं लेगा, वरन् अनवरत आगे बढ़ते हुए अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए चेतना जगाता रहेगा। 'श्रीभट्ट' नामक खण्ड काव्य के माध्यम से कवि जनसमुदाय को वर्तमान के परिदृश्य से कविता के माध्यम से चेताना चाहता है और इन विपरीत परिस्थितियों में भी उसे निराशा से आशा तथा निष्क्रियता से सक्रियता की ओर ले जाना चाहता है। कविता पुस्तक की भाषा सरल, सुगम और बोधगम्य है। संवाद के समय पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है, साथ ही कश्मीर के देशज शब्द भी कविता में रंग बिखेरते हैं।

भले ही आज किसी जैन-उल-आविदीन के शरीर पर विषैला फोड़ा न निकला हो, भले ही शारीरिक चिकित्सा के लिए श्रीभट्ट के गरुड़ शास्त्र की आवश्यकता न पड़े, भले ही आज भौगोलिक, ऐताहासिक तथा राजनीतिक संदर्भ बदल गए हों, लेकिन इतिहास ने जिस भयावह

रूप में वर्तमान संदर्भ में अपने को दोहराया है, ऐसी स्थिति में प्रत्येक मोर्चे पर आज श्रीभट्ट के अनुभवों, चिंतन, निस्वार्थ भावना और सेवा की नितांत आवश्यकता है। आज कट्टरपंथ, अलगाववाद एवं सशस्त्र आतंकवाद के रूप में भारत के सिरमौर मस्तक पर ऐसा राष्ट्रघातक विषैला फोड़ा निकल आया है, जिसके रिसाव से नयें, तेवरों और कलेवर के साथ डुलचू, सिकन्दर बुतशिकन, हैदरशाह, औरंगजेब, जब्बार खान, सैय्यद और मलिकों जैसे देशविरोधी तत्व कैकटसों की भंति उग आए हैं।

दुर्भाग्य यह है कि आज इस राष्ट्रघातक फोड़े का जडहीन करने के बजाए इसे घृणित राजनीति के स्तर पर पुष्पित पल्लवित किया जा रहा है। आतंकवाद के प्रथम शिकार कश्मीरी हिन्दुओं के अधिकारों का हनन् कर उनके हत्यारों और निष्कासन के लिए ज़िम्मेदार तत्वों के साथ हाथ मिलाए जा रहे हैं, जघन्य हत्याकण्डों, मतांतरण की घटनाओं को दोहराया जा रहा है। घाटी की पुरातन अक्षुण्ण परम्पराओं,

संस्कृति–संस्कारों को नष्ट–भ्रष्ट तथा देवालयों / मंदिरों को खण्डित किया जा रहा है। किसी विस्थापित कैम्प में अपने ही देश में शरणार्थी सा जीवन जीने वाले श्रीभट्ट की योग्यताओं की अवहेलना कर उस सोच को प्राथमिकता दी जा रही है जो तिरंगा और संविधान का सम्मान करने वाले समुदाय के जातीय नरसंहार की दोषी हैं। ऐसी विकट और विपरीत परिस्थितियों में भी 'श्रीभट्ट' शीर्षक से यह काव्य पुस्तक अपनी उपादेयता को सिद्ध करेगी, ऐसी आशा है।

–डॉ महाराजकृष्ण भरत

❖❖❖

प्रकरण : एक

अब नहीं उजाला शेष बचा
छा गया अन्धेरा दिशा-दिशा
ऊंचे पर्वत शृंगों / मन्दिर / घाटों पर
केवल रहने लगा / अपने षड्यन्त्रों सहित
भयानक तम।

तमस - दौर के -
चौदह सौ बीस ए०डी० में-
सुल्तान सिकन्दर के बाद
जिसने तख्त संभाला
वह ज़ैनुल आबिदीन था।

सुल्तान सिकन्दर-/ वही सिकन्दर
इतिहास ने जिसे/'बुतशिकन' नाम से
दर्ज किया/इसकी करतूतों को-/ध्यान में रखते

बुत ही नहीं तोडे इसने
पूरी मानवता को ही तोड़ दिया

बुतशिकन जल्लाद से भी आगे थाः
इसने-/ लाखों की संख्या में
विद्याव्यसनी शान्त सौम्य काश्यपों के
शीश धडों से कटवा -/ फिंकवाये
क्योंकि इसलाम कबूलना -/
उन्होंने माना नहीं

भयाक्रान्तों के -/ अस्वीकृति के स्वर में ही
घेरे में लाया-/ इस्लाम के।
है बचानी-/ जिसने ठानी
वे-/ बीहड़ वन-गहर में छिप के-/
जल्लादी नज़रों से
बैठ गये-/ वे भूल गये-/
दिन की धूप सुखद
चाँदनी चाँदनी रातों की
वह देख रहा-तम केवल तम-/
हर ओर से बढ़ता आता जो

कई बटोर-/ग्रंथ प्यारे
प्यारी पोथियाँ अपनी-अपनी
ऊंचे पर्वत-दरों पर चढ़-
ज़िन्दगी की कीमत पर अपनी
मैदानों में छिप-छिप/ जा पहुँचे

जहाँ गये सम्मान मिला
सिर-आँखों पर ही-/ स्थान मिला
अपनी बुद्धि से प्रतिभा से
जीते दिल-/ पूरी जनता के।

पहले हुए सुल्तानों से / ज़ैनुल नहीं था-
रंचमात्र भी-/ पीछे/'दया' शब्द से-
वंचित ही था/ बिलकुल ही
शब्दकोष /इसका

जो इने-गिने मन्दिर बच पाये थे
सुल्तानों की-/ हैवानी चोटों से
उनको भी-/ करवाया भूमिसात्
निर्दयी ज़ैनुल ने -/ हथोडो से

संस्कार मिले थे यही उसे -
मारो, लूटो अत्याचार करो-
हिन्दुओं पर/ यही जिहाद है जीवन में
यही सीढ़ी है जन्नत की।

पढ़ी हो नहीं थी काश्यपों ने
भाषा, कभी भी,-/ तोड़ने की
फिर भी-/ संस्कार संस्कृति उनकी
सुल्तानी वारों से-/ न बच पायी

समझ गये थे-/अत्याचारी ज़ालिम
संस्कृति की भाषा-/ संस्कृत है
काटना जड़े इस भाषा की-
मिटाना काश्यप संस्कृति को

अनेक जुल्म ढ़ाये-/ ज़ालिमों ने
तिलक लगाने वालों पर
कहें कहाँ तक-/ अनगिनत सूची

इतिहासों के पन्ने-/ भरे पड़े
अमानवों के अत्याचारों से
इनकी करतूतें पढ़ते ही
तेज़ हो जाती दिल की धड़कन
छा जाता अन्धेरा आँखों में
फूट पडती-/ अश्रुवितस्ताएँ
घुटता है दम!

●●●

प्रकरण : दो

अत्याचारियों आततताइयों को -
दिखी जहाँ भी
किरण टिमटिमाती कोई -
उसे अन्धकार करने को दौड़े
अपने षड्यन्त्रों -पाखंडो के-
कन्धे थामे ।

हिन्दू-शासन रवि की
एकमात्र बची किरण थी
शासनकुशल कूटरानी
खुराफात की गन्दी मिट्टी से -
निर्मित
शाहमीर* ने-
रच कर साजिश
रानी को बन्द करवाया
अपने ही भवनों में / और -

*राजा सहदेव (1301-1320) के शासनकाल में जिन दो आतताई विदेशियों को कश्मीर में शरण मिली उन्ही में से एक था शाहमीर और दूसरा रिंचन आगे चल कर इन दोनों ने कश्मीरी (काश्यप) संस्कृति को लहुलुहान कर दिया ।

भेजा फ़रमान-
मुझे व्याह लो
वरना
हो जाओ तैयार
ज़िन्दगी से हाथ धोने को
जान चुकी थी रानी
कपटी विदेशियों के भीतर को।

कहला भेजा-
मुझे स्वीकार प्रस्ताव
आ जाओ।

वेश में सजी दुल्हन के
रानी प्रतीक्षारत रही
सोलहों श्रृंगार किये
इसलिए-
कि न रहे अविश्वास की-
कोई गुंजाइश।

मस्ती में कदम बढ़ाता
सफलता पर इतराता
कामुकता झलकाता
शाहमीर-
कक्ष में घुसा रानी के
जाने क्या - कया.
सड़न भरी थी उसके दिल में

प्रविष्ठ हुआ देख
रानी अतीव सचेत हुई
चेहरे पर के भाव-
बदल डाले
उठी-
पायल ध्वनि ने-
सदे कदमों का साथ दिया
वस्त्रों पर छिड़की-
इत्रों ने
गंधिल कर डाला कण-कण

अत्यन्त मनहर वाणी में बोली-
'स्वागत है! स्वागत है!!'

दुलहे के हाथ उठे
साथ लबों की मुस्कान के
आलिंगन को

बिजली की गति को शर्माते
रानी ने -
छिपी कटार घोपं दी
अपने वक्षस्थल में
शेणित का फव्वारा फूटा
गिरी धम्म से
मन में रहा इस वेला भी-
गिरे न काया
अन्यायी - पैरो में।

असफल हुए देख-
इरादे अपने
शहमीर बहुत पगलाया

रानी गई वैकुण्ठधाम
अपनी शुचिता थामे
पृथ्वी पर लिख-
लाल खून से
'स्वधर्मों निधनं श्रेयः........'
सच्ची वीरता के -
सारे लक्षण।

●●●

प्रकरण : तीन

अन्यायों, अत्याचारों-/अनैतिकताओं का
भरते जाएँ-/ हद से ज़्यादा भार
छोटी - सी जीवन - नैया में
वह कहाँ तैर पायेगी?

भूल बैठे जो -
मानवता को / सहनशीलता को
धर्मों के प्रति समादर को
सहनी ही पड़ती मार उन्हें-
अदृश्य के हाथों
सच ही -
लाठी ईवर की
आवाज़ नहीं करती।

अलसुब्ब एक दिन
सुल्तान ज़ैनुल आबिदीन
रातभर-/ नवयौवन सम्पन्न
सुन्दरतम सुन्दरियों के संग
समय बिताकर -
जब जागा-/ शरीर पर
एक छोटा-सा दाना-सा
निकला देखा।

आई गई हो गई बात ।
पर / कुछ दिनों के ही अन्दर
दाना-/ दाना रहा नहीं ।
बन राया/अच्छा खाया-/ फोड़ा
दिन-दिन बढ़ता गया
लाल सुर्ख हो गया
जैसें बहुत बडा-/ अम्बरी सेब

रिसने लगा / बन गया
असह्य दर्द की पराकाष्ठा ।

ज्वर हो गया बहुज ज़्यादा
सुल्तान को
हाल हो गया खस्ता
अब-
करवट बदलना/मुश्किल हो गया
ढेर बन गया/ असमर्थता का
हो गया-/ जीवित मुर्दा !

गाइब हो गई-/ रौनक
सभी हरमों की
रखैलें, बेग़में-
झुलसी नर्गिसों का गुच्छा हो गई ।

दरबारी, मंत्री-/ झरने लगे
आँसू/ उधार के

फूट - फूट पडा ग़म
रंगमहल की ईट-ईट से ।

विषभेज दिया-/ रोये-रोये में-
शरीर के / शरीर के फोड़े ने
बरदाश्त से बाहर के दर्द की
मसनवी-दर मसनवी लिखी-
कर्राहों ने

शाही हकमी/तबीब तजरुबेक़ार
हो रहे थे लाचार / फोड़े के सामने

चीदा-चीदा हकीम
लाये गये-
काबुल और यूनान से
वे भी मगर-
अपने इल्में तिबकी
बरतरी साबित करने में-
नाकाम रहे।

सुल्तान था मुश्किल में
पीप से / खून -पसीने से -
तर हो जाता था बिस्तर
और ब-मुश्किल ही / टिकता था
बिस्तर के भीतर!

किसी गहरे कोने में -
खुश थे सब वज़ीर
'तख्त मेरा ही होगा
काबिलतरीन मैं ही हूँ ना
रखने न दूंगा किसी और को ताज सिर पर'

मेल नहीं था-/ मन जिह्वा का
शाह के शाही महलों में
सब की अपनी खिचडी
पकती थी पर्दों में।

'मैं बेहतर हूँ सब में से -
लपटों को मैंने सौंप दिये / कितने ही
बुतपरस्त काफिर
किननों के सर कलम किये हैं
अपनी तेज़ शमशीरों से
मटियामेट करवाये मैंने-
कितने बुत / बुतखाने भी
और संस्कृत ज़बान के-
कितने ही कलमी-नुस्खे
गर्के आब व आतश करवाये
चलने नहीं दूंगा किसी की
अब सुल्तानी मेरीं ही '

इसी तरह मनमोदक खाते
मन ही मन सब मंत्री गण
अपना दावा जता-जता कर
खुश करते थे अपना मन।

मौत खड़ी है सिर पर शाह के
था जन-जन अव जान गया
तभी योग्यतम दल-/ गुप्तचरों का -
राजभवन में आ पहुँचा/
इस दल के सभी सदस्यों का
शुमार योग्यों में होता था/
शाह भी इन सब पर -
बहुत भरोसा करता था।

देखी हालत सुल्तान की जब /
बोल बस यही फूटे/उनके होठों से /
या रब् अफूह!!
गुनाह बख्श दो सुल्तान ज़ैनुल़ के !

पाई थी एक गुप्त सूचना:/ कि जंगल में
एक गुफा के अन्दर/
एक बाकमाल पण्डित रहता है-/
जो इलाज करने में माहिर है

निकले शाह के कक्ष से
किसी और कमरे में बैठे
की मंत्रणा आपस में
निर्णय हुआ जंगल में जाकर
पण्ड़ित को लाया जाए कैसे भी
क्योंकि वह फोडों के इलाज का माहिर है
बहुत बड़ा आलिम है/ गज़ब का जर्राह भी
रूहानी है बन्दा / 'गरड शासतर' का माहिर है
इनशाअल्लाह/ इसके इलाज से सुल्तान ठीक
हो जायेगा

गये / छान मारे कई जंगल
गुप्तचरी-कला के विशेषज्ञ थे
अतः पाया पण्डित को
एक ऊंचे पहाड के दामन में के
झुरमुट के नीचे-/ बैठा छिपा-सा

प्रज्ज्वलित थी अग्नि सामने
पत्तों पर कुछ फल थे
डाल रहे थे समिधाओं में
फल- फांकें / कुछ पढ़ के/
ध्यान मग्न थे-/ किसी ओर का -
उनको भान नहीं था

गुप्तचरों का दल-/ जब पहुँचा
पास बहुत ही उनके/ तब भी वे
एकाग्रचित्त हो / हवनकुंड में
आहुतियाँ / डाल रहे थे।

'पण्डितजी!' पुकार लिया जब
तब भी सुना नहीं
झकझोरा फिर ज़ोर - ज़ोर से
तब-/ शान्त वाणी में बोले-

'आप कौन?
कैसे आये हैं?
चाह रहे क्या मुझ से?'
'पहले तो यह बतला दीजिये-
क्या आप वैदय सिरी भट्ट हैं?
'हाँ, हाँ मैं ही हूँ....'

'पंड़ित जी है अर्ज़ आप से
आप हमारे साथ चलें
बीमार बहुत सुल्तान
चल कर आप इलाज करें।'

'कौन बीमारी लगी शाह को
इसका तनिक व्योरा तो दो
जिससे औषधि-निर्णय कर लूं
क्या - क्या दे दूँ मैं उसको'

आप उठें महाराज!
रास्ते में बतला देंगे
इससे वक्त बच पायेगा
आप मेहरबानी कीजिये '

किया दण्डवत् अग्निकुण्ड को
फिर निज गुफा की ओर चले
आये वस्त्र बदल कर तत्क्षण
गुप्तचरों के साथ चले ।

●●●

प्रकरण: चार

सुल्तान बहुत कमज़ोर हुआ था
पड़ा हुआ था शैय्या पर
पल-पल में कर्राहता जाता
हो जाती थीं आँखें नम।

ईद-गिर्द हकीम खड़े थे
हाथों में दवा लेकर
पर
साफ-साफ उनके चेहरों पर
अपनी हार झलकती थी।

दिया हकीमों ने भी भट्ट को
विषफोडे का सब व्योरा
जिस के कारण -
हुआ पडा था-
शाह का गात-
विषाक्त सारा।

सुल्तान गिन रहा था साँसें
गरुडशास्त्रज्ञ-
औषंशियाँ कूट रहा
साथ-साथ बंधाते जाते थे -
ढाढस
ध्यान रख रोगी मन का।

पूरी रात जाग कर ही
संजीवनी तैयार हुई
औषधि का परीक्षण कर के
वैद्य रूवयं आश्वस्त हुए।

ब्रह्ममुहूर्त में अपने हाथों
फोड़े पर जब लेप लंगाया
स्पर्ष मात्र से ही -
औषधि के
रोगी राहत-
बहुत ही पाया।

दे दी पुडिया
इसके प्रभाव ने
लेते ही
मन शान्त कर दिया
पता न चला किसी को भी
कब कैसे -
सुल्तान -
गहरी नींद में सोया।

सारे हकीम हैरत में फ्ड
लगे हेरने श्रीभट्ट को
'भारत का वैद्यक सच ऊंचा '
कहता था मन
फक्क थे चेहरे।

'चलिये बाहर चलें
सुल्तान को ऐसे ही छोडें
इन्हें आराम की -
सख्त ज़रूरत है
इनके पास-

सिर्फ एक परिचारक हो
दोपहर बाद-
देखेंगे इनको ।

+ + +

जगाया बहुत प्यार से
धीरे-धीरे
श्रीभट्ट की आज्ञा पर-
परिचारक ने

श्रीभट्ट की ओर-
कृतज्ञता भरी नज़रो से
देखा रोगी ने
अति ही विनम्र हो ।

निरीक्षण किया वैद्यवर ने
फोड़े का रिसाव -
पहले से कम था
लालिमा घटी हई थी
सूझन कुछ - कुछ ही थी
फोड़े का आकार भी था
तनिक घटा हुआ
अब न पहले जितना
कर्राहता था सुल्तान

कहा-
'वैद्‌यजी !
लगता है अब
बच पाऊंगा
आपकी इनायत-
और दवाओं से'

'आराम करें
ज़्यादा न बोलें
अभी फोडे के ज़हर का असर
जिस्म में है
हफ्ते - दो हफ्ते
दवा खाने और मल्हम लगाने से
सब ठीक हो जायेगा
किसी तरह की
फिक्र नहीं
पहले से भी ज़्यादा
तन्दरुस्ती का-
एहसास होगा आपको
जिस्मानी और मानसिक भी
यदि ईश्वर की इच्छा हो।

●●●

प्रकरण: पाँच

घीनधन आवरण भेद
ज्यों किरणें बाहर आती
ऐसे ही सुल्तान रोग से
पाकर मुक्ति-
बाहर आया।

सबने देखा
स्वस्थ, सशक्त, ऊर्जामय-
पहले से ज़्यादा
औषधियों के सेवन से
बना हुआ था / अब राजा!

लटक गये थे चेहरे बिलकुल
सभी बडे हकीमों के
हुए बहुत ही घायल थे वे
हीन-भावना के शर से।

नवजीवन के नवप्रभात में
नव उत्साह नव संकल्प लिये
अपने कर्म-पथ पर
दृढ़ता से
क़दम बढाये फिर शाह ने

पहना ताज
तख्त पर बैठा
नई उमंग-
नव उत्साह से
उसके तौर-तरीके दीखे
सब को बदले - बदले से

लगा दरबार
दरबारी सब थे
चकित बहुत
देख-
शाह का व्यवहार
उनको लगा-
सुल्तान वह सुल्तान नहीं
गाइब कुछ-
उसके अन्दर का
चेहरे पर के भाव-
नहीं दीखते पहले जैसे
इसकी जबान भी
थी नहीं बोलती
कट्टरता की वह भाषा

'आज मिल गया-
हमें न्याय है '
'आज हमारा काम बन गया'
' आज शाह कुछ और लगे हैं'
सुना ध्यान से -
आज सभी को...... ।'

निकले जो -
दरबारद्वार से
ऐसा ही कुछ-
कहते जाते थे
सब के चेहरों पर-
रौनक थी
सब अब-
राजा के गुण थे गाते

अपना कर्तव्य-
निभा कर श्रीभट्ट
लौट गये वन गौहर में ।
पर वे फिर भी-
बसे हुए थे-
सुल्तान ज़ैन के -
उर - अन्तर में ।

बार-बार ज़िहन में आते
श्रीभट्ट के गुण -
उनकी क्षमताएँ
अपने हाथों दवा बनाना
ढाढ़स बांध-बांध
बचाना भी।

बार बार अपने से कहते-
श्रीभट्ट नहीं मामूली बन्दा
ये हैं सच ही-
कोई फरिश्ता
जन्नत से ही सीधे उतरा।

मेरी यह ज़िन्दगी उन्ही की
अगर न आते-
हालत क्या होती?

अपने ऐसे मसीहा को-
बिलकुल खाली हाथों भेजा
मुझ जैसे सुल्तान के लिये
करना ऐसा-
शायाने शाँ था?

उसी लम्हें
एक फरमान निकाला
'बाइज़्ज़त बुला कर लाओ
मुझे ज़िन्दगी देने वाले को
मेरा रोयां-रोयां
कर्ज़दार है उनका।'

'सारा कर्ज़ चुकाना-/ नामुमकिन पर
थोड़ा - सा भी चुका सका
यह उनकी
दी हुई ज़िन्दगी
तभी धन्य मैं मानूंगा।'

●●●

प्रकरण : छह

चढ़ ही आया -
दरबार में श्रीभट्ट-
सूर्य-सा/ आमन्त्रण पर

यद्यपि अपना पहनावा
पहनने की-
काश्यपों को -
सख़्त मनाही थी
फिर भी संत-वैद्य
पहन कर आया था-
जातीय पहनावा अपना

लम्बा चोग़ा
हिम जैसी श्वेत-/पगड़ी
पेरों में 'पुलहोर'*
कन्धों से झूलती 'कपरचादर'**

---

*घास से ओटी रस्सी से बुना सैंडल या चप्पल। आजकल इसका रिवाज न के बरार है।

** सफेद लट्ठे का अंगा या चपंकन।

ललाट पर कुंकुम तिलक
बढ़ी हुई दाढ़ी
तेजस्वी चेहरा / बादाम-सी आयत आँखें
आध्यात्मिक पराकाष्ठा पर -
पहुँचे हुए वन्दनीय संत
अनोखे आर्कषण से भरपूर।

देखते ही सुल्तान खडा हो गया
अपना आधा आसन देकर
अपने-अपने आसन से-
उठ खडे हो गये-
सभी दरबारी।

हाथ जोड़ कर
याचक बने सुल्तान-
'अय लुकमाने जमाँ!
बचा ली है मेरी जाँ
माँग लीजिये मुझ से कुछ भी

फैली मुस्कान तनिक -सी
संत-वैदय के अधरों पर
बोले
'मेरे पास सब कुछ है सुलतान
चोग़ा, शिरस्त्राण, पुलहोर
रहने को अब-
ग़ार भी है/ खाने को जंगली फल भी
अब क्या मुझे ज़रूरत
किसी और चीज़ की'

सुल्तान सहित दरबारी
हैरान हो गये!
सुन कर जवाब
लगे देखने वैद्‌य शिरोमणि को
जैसे हों वे -
कोई अद्‌भुत से अद्‌भुत प्राणी!

वे सब थे अनजान
संत की सन्तोषवृति से
इस सच्चाई से -
कि काश्यप हैं -
अध्यात्म की शिखर चोटियाँ
समस्त विश्व में।

सीधे सादे से शब्दों के-
अर्थ लगाये और-
मोड़ के
सदा वाम ही चलती है
सीधी कहाँ बुद्धि कुटिल की !

श्रीभट्ट शान्त महासागर थे
आकर नदियाँ कितनी मिल लें
या पल्टनें लहरों की उछलें
क्या कोई फर्क पडता है ?

'मैं हूँ कर्ज़दार आपका
कर्ज़ तनिक चुकाने दीजिये
यह मेरी दिली ख्वाहिश है।'

'चाहत नहीं किसी वस्तु की
चाहत है जीवन में केवल
राज्ञामता* की-
करुणा की।'

'रोज़े क़यामत कर्ज़दार हो
क्या मुंह दिखला दूँ
अल्लाहताला को ।

---

* एक स्थानीय देवी जिनका मन्दिर एक रंग बदलते चश्में के मध्य में 'तुलमुल' नामक गाँव में है।

इसी लिए है अर्ज़ आपसे
कुछ तो मुझ से-
माँग लीजिये ।'

मुक्त करूँ अपने को कैसे
आग्रह भी सुल्तान का रख लूं
बोलूं क्या ?
सोच यही बस
चिन्तन में डूबे-
श्रीयुत श्रीभट्ट ।

●●●

प्रकरण : सात

राज्ञामाता के परम भक्त को
नहीं लोभ, मद, मोह व्यापता
उसका सब्र कुछ
समर्पित भक्ति है
जो -
दामन माँ का गहता है।

गहरे चिन्तन का ही फल था
जो विचार श्रीभट्ट को आया
कब से किसी कोने में
मन के
यह विचार दबा पड़ा था
सुल्तानी नीतियाँ निरख
उचित रहेगा क्या
इस विचार को भाषा देना?
उत्तम यह अवसर है
इसके उत्तमतम कब आयेगा----

'बिना हिचक बिना फिक्र के
कुछ भी माँगें
मसीहा मेरे !
जो माँगेंगे-
अता करूँगा
आपका मेरा है इक नाता ।'

'मुझे नहीं है हिचक ज़रा भी
नहीं फिक्र है किसी बात की
दे न सको मनचाहा मुझको
कहना मेरा व्यर्थ ही होगा'

'नहीं नहीं ऐसा मत सोचें
दे सकता आपको कुछ भी-
सोना, मोती, हीरे चाँदी...
चाहें तो जागीर माँग लें
देने की कुव्वत रखता हूँ ।'

बोले सुदृढ़ वाणी में श्रीभट्ट
'सुल्तान! वापस बुलवा लो
मुल्क बदर जो किये हैं पण्डित
जज़िया, मालेगनीमत, शवदाह-कर
गरज़ कि कर सारे
पंड़ितो पर लगाये हैं -
जो, माफ कर दो

अपना धर्म पालन करने की -
हो छूट अब से पंडितों को
दे दो यह भी हुक्म-
पूजा करें, घंटा-शंख-बजायें
तिलक लगायें
मन्दिर जायें
पहने पहनाओं को अपने
निश्चिन्त हो के

खुलवा दो ताले-
संस्कृत शालाओं के
संस्कृत संस्कृति की भाषा है
अध्ययन-अध्यापन पर इसके
रोक हटा दो।'

पंडित ले लें साँस मुक्त हो
जियें न पिंजरे के पक्षी हो
इन्हें मिलें अधिकार समूचे
और मिलें सत्कार सभी से......'

'खितमतगाार ! खल्के खुदा के
आप चाह रहें जो
वैसा ही होगा
नहीं टाल सकता हूँ-
हुक्म आपका
इसके लिए अभी कर दूँगा
जारी मैं शाही परवाना

'अब से -
कानून एक ही होगा
मुसमान का पंडित का भी
जो हक़ एक मुसलामन का
वही होगा हर पण्ड़ित का

'अब मेरी भी है एक चाह-
बनजाएँ आप मेरे मशीर
बहुत बडा रुतबा होगा
रियातस भर में होगा नाम

‘ कह दें सुयोग्य शिष्य श्रीवर से
संस्कृत भाषा का मझको-
दे दें ज्ञान
योगवासिषृ जैसे ग्रंथों को
पढ़ा बढाये मेंरा मान।’

कुछ भी वृथा नहीं जाता है
ज्ञान मनोरम सद्ग्रन्थों का
है निखारता यह चरित्र को
पारस से भी है यह अनुपम।

पढ़े अनेक सद्ग्रन्थ ज़ैन ने
पंडितवर पण्डित श्रीवर से
पडा प्रभाव इनका कुछ इतना।

कई संस्कृतज्ञ-
बाहर से भी मंगवाये।

ज़ैन के सादर आमन्त्रण पर-
एक पण्डित-
जो बाहर से थे आये
इनके पास-
अथर्ववेद की प्रति थी-
हस्तलिखित प्राचीन पाण्डुलिपि।

ग्रन्थों के अध्ययन
और -
विद्वानों के सानिध्य से -
जागी
ज़ैनुल आबिदीन के मन में
तीर्थाटन की अति जिज्ञासा
गया-
गंगबल' शिशरमनाग जैसे-
अनेक तीर्थों पर
हुआ शान्त चित्त
धुला शेष मल
दिल के भीतर था
बचा हुआ जो

हत्यायें में, लूटपाट, तोड़फोड़
सब कुकर्म अब त्यागे
खुदवाई नहरें-
उपज बढाने को
सोचा-अन्न सुलभ हो सब को
सेतु सुपथ अनेक बनवाये
बाँटा प्यार और ज्ञान सभी को

किये कार्य अनेक कि जिन से
न्याय मिला साधारण जन को
गुत्थियाँ घूम-घूम सुलझाई वास बनाया
जन के मन को / दिये काम जो बिना काम थे
खुलवाये बहु कल-कारखाने
संपुष्ट हुआ अब अर्थतन्त्र
भरे-भरे हो गये खज़ाने ।

काश्यप भूले दुखड़ा अपना
लौटे तो घरबार सजाये
अक्षरशः यह उक्ति सत्य है
जैसा राजा वैसी ही प्रजा ।

भट्ट के/ तन-मन के इलाज से
सद्ग्रन्थों के -
गहरे अध्ययन से
विद्वानों के -
प्रवचनों से -
अब जैनुल ने -
अपना सिद्धान्त बनाया
फर्क न कोई मेरे आगे
मुस्तिलम हो या पंडित भाई
दोनों एक समान हैं मेरे
जैसा होते भाई - भाई

यही सीख सुन्दर सी दी है
मेरे मसीहा-मशीर ने मुझको
इसके बल पर ही ताअबद
ज़िन्दा रहेगें कश्मीर के वासी।

भादों शुक्ल त्रयोदशी को
प्रकटी व्यथ* है माना जाता
इसका पूजन-अर्चन करके
हर काश्यप प्रवाह में इसके
प्रदीप बहाता

इस पूजन में शुरू किया-
सुल्तान ने भी सश्रद्धा आना
दिये जला कर उन्हें बहाना
नत मसतक हो दुआ माँगना।

सुल्तान ने व्यवहार को बदला
शासन के हर तार को बदला
इसी लिए मशीर ने उसके
'बड़शाह' उसके नाम से जोडा।

* वितस्ता नदी

प्रकरण : आठ

एक दिवस अध्ययन कक्ष में
सुल्तान सोच रहा था कुछ बैठे
आया विचार तत्काल ही फिर
उसने श्रीभट्ट को बुलवाया

'समादरणीय !
मेरे अन्दर बहुत दिनों से
एक सवाल कुलबुला रहा-
मैं हूँ उस सुल्तान का बेटा
जिसने बहुत बेरहमी से
मन्दिर भव्य मूर्तियाँ सुन्दर
खण्ड-खण्ड कर तुड़वा दी
कलमा पढ़वा दिया पंडितों को
सम्पति उनकी लुटवा दी
संस्कृति को मटियामेट करवाया
फन व अदब नाबूद कराया

फिर भी-
आपने उसके बेटे का
सभी तरह से -
कल्याण किया
आई नहीं क्यों
भावना बदला लेने की
जबकि अच्छा मौक़ा था-
हाथ लगा ! !'

'सुल्तान !
तुम्हारी दुष्टि से
प्रश्न सही है
पर, सुन लो
नहीं ऐसी संस्कृति हमारी
परम्परा प्राचीन हमारी
हम काश्यप हैं
ऋषि का दिया चरित्र हमारा
अपना ही कुटम्ब मानते
अखिल सृष्टि को
वसुधा अपनी जननी प्यारी
हर पूजा से पहले करते
पूजा अपनी पृथ्वी-माँ की ।'

●●●

उपसंहार

आधी रात।
पसर राया सन्नाटा
कैंप के तार-तार होते टेंटों में
ओर / उसकी आँखें
ठिठक गई
करवट बदल-बदल कर।

याद आ रहा है उसे
पण्डित मुकुन्दराम को
साँप का डसना
नन्हें राहुल को
बिच्छू के डंक से
बेहरकत
बिन साँस का होना
दोनों के अन्तिम संस्कारों में शामिल
आँखें भर आना।
आँसू पीते- पीते
न जाने कब
झपकी आई
वह नहीं जानता।

उसे विलक्षण सपने में
दिखाई दिया
आशाओं का सूरज
पण्डित श्रीभट्ट
क्रुद्धमुद्रा में
आव न देखा ताव
गुस्से में आकर
प्रशनों की झडी लगादी

आप हमारे रक्षक हैं
कब आओगे
हमारा उद्धार करने ?
कितने ही़ं संकटासन्न हैं हम

अपमृत्यु
लूटपाट, आग, अनादर
अंनेकों बार
रह-रह कर हमने
झेले
पर आप !
अब तक -
क्यों नहीं आये ?

'हाँ, हूँ मैं
आप का संरक्षक
पर आज
कितने हैं
मेरे अनुयायी ?

तुम हो
कितनों ने सहेज रखी है
अपनी पहचान?

'मेरी प्रतीक्षा में
बैठे तुम
कभी लेते हो
अपने भीतर की थाह ?

'कितने धारण करते
अपने संस्कार
कितनों को याद है
सुप्रभात
संध्योपासन के मंत्र?

'कितने
नित्य हैं पूजा करते ?
मन्दिर जाते?
'इतिहास भी जल्दी
विस्मृत करता
उस समुदाय को
जो धरोहरों को
अपनी संस्कृति को
भूल बैठता है

'पहचानते क्या
आध्यात्मिक शक्ति
पुरखों की?
मेधा प्रतिभा अपनी
कुल वंश को
परम्परा को ???

'नियत समय पर
होते कितने कन्यादान?
कहीं
समय पर
आजाती बारात?

"कितना शुचिता का -
रखते ध्यान
भूमि आसन
शुद्धहाथों से
करते भोजन?
'जैसा आहार
वैसे विचार
विरासत में
यह मंत्र भी है हमने पाया !

'अब होते
कितने ही तलाक
क्या दादा
परदादा

इस शब्द से परिचित भी थे ?
क्या जन्मजन्मान्तर का बन्धन
यों तोडा जाता है
झटके से ?

'यह कौन से विषाणु
घुस आये हैं
तुम्हारी-
धमनियों में
'क्या तुम
तुम रह गये हो या फिर
कोई और हो गये हो ?

'जन्मदिवस मनते अब कहीं
मनते
हेप्पी बर्थडे
मोमबतियाँ
केक पर धर
अंधियारे का
होता आवाहन सत्वर

'कितने माँ - भाषा के
मधुर स्वाद से
परिचित हैं ?
कभी ज़िहन में आया
माँ भाषा से -

मुंह मोडना
मिटाना है-
अपनी ही हस्ती को ?
और कहूँ
कितना मैं
आ सकता हूँ क्या मैं
इन क्षणों में तुम्हारे पास हूँ?'

स्तब्ध-सा रह गया
शिविर के सननाटे में
विस्थापित पण्डित
पानी - पानी हो गया
श्रीभट्ट के सामने
निरुत्तर-सा

मौन
पलकें झुकाये
अश्रुसिक्त
वंचनाओं से उभरकर उठने में
विवश
कैसे मिला सकता था आँखें
अपने आप से ।

देख निस्सहाय
सूझा विचार

कहा श्रीभट्ट ने
'मैं आऊँगा
पाओगे तुम मुझे
अवश्य ही एक दिन
अपने भीतर
जब साकार हो उठेगा
तुम्हारा दबा पडा उत्साह
विरासत
के अनमोल क्षण
संस्कृति
तुम्हारे
आकाश पर
टिमटिमाने लगेगी

जब मेरा ज्ञान
तुम्हारे आचरण से
फूट पडेगा
संकटाछन्न

यह मेघ
छंट जायेगें
और सरस होगी
तुम्हारी आशओं की
धरती ।'

उस रात जागा
अब तक
नहीं सो सका पण्डित ।

Courses :

- Basic (3 Months /Six Months)
- DTP (PageMaker, CorelDraw, Photoshop)
- Programming Langauges
- Trouble Shooting of Hardware & Software Installation.
- DTP, Projects, Thesis Work, English, Hindi & Urdu (Quality Typing Colour Printing).

At

जनरेशन केयर कम्पयूटर्स

गली न०.9, सूर्या विहार, तालाब तिल्लौ, पाटा बोड़ी,

जम्मू - 180002, (जे एण्ड के)

दूरभाष: 0191-2504474, 9906092366

पृथ्वीनाथ मधुप की अन्य रचनाएँ

कविताः-

1. वे मुखर क्षण
2. खोया चेहरा
3. खुली आँख की दास्तान
4. बबूल के साये में मोंगरा
5. रुकी नदी
6. मोहताज नहीं नाम की व्यथा

गद्यः-

1. कश्मीरियतः संस्कृति के ताने-बाने
2. कश्मीर की लोक-कथाएँ

अनुवादः-

1. कवि - श्री माला परमानन्द
2. वाणी वितस्ता की

सम्पादनः-

1. गल्प-सौरभ
2. कश्यप भारती
3. हिन्दी कविताएँ विस्थापन विशेषांक

भाषा शिक्षण :-

1. राष्ट्र-भाषा से जान-पहचान
2. कश्मीरी स्वयं-शिक्षक
3. कश्मीरी बोलचाल

सम्पर्क सूत्रः- मकान न०. 58, 'शान्तासदन गली न०. 7,
सरस्वतीविहार, तालाब तिल्लौ, जम्मू-180002